Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2022 3(2), 1267–1269

A ROLE OF COMMUNALISM IN BHISHAM SAHNI'S TAMAS

भीष्म साहनी के तमस में साम्प्रदायिता की एक भूमिका

Dr. Wankhem Meratombi Devi [1]

[1] Assistant Professor, Hindi Department, Dhanmanjuri University, Manipur, India

ABSTRACT

English: Bhisham Sahni has a prominent place in Hindi fiction. Bhisham Sahni effectively portrays the reality of social life in his literature. His literature is sympathetic and realistic. Whatever Bhisham saw and experienced in the society became the subject of his literature. He has said about his works- "My experiences in the field of literature have been as simple and straightforward as in life. I believe that there is no such thing as literature apart from oneself. I will be able to create stories as I am." Like in the novel Tamas, the fire of communalism spread among the common people due to the divide and rule policy of the British. It depicts the helplessness of the people suffering from tension and terror and the society burning in this fire. Those who were killed in communal riots were mostly poor and weaker sections of society. These were the ones who were hurt the most. People from the upper class usually lived in safe conditions and helped each other.

Hindi: हिन्दी कथा साहित्य में भीष्म साहनी का प्रमुक स्थान है। भीष्म साहनी सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रभावपूर्ण ढंग से अपने साहित्य में चित्रित करते हैं। उनका साहित्य सहानुभूतिपरक और वास्तविक है। भीष्म ने जो कुछ समाज में देखा, अनुभव किया वही सब उनके साहित्य का विषय बना। उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में कहा है–''साहित्यके क्षेत्र में मेरे अनुभव वैसे ही सपाट और सीधे सादे ही रहे, जैसे जीवन में। मैं समझता हूँ, अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज भी नहीं होती। जैसा मैं हूँ वैसी ही मैं चरनाएँ भी रच पाऊँगा।'' जैसे तमस उपन्यास में अंग्रेजों की फूट डालो, राज करो नीति से आम जनता में साम्प्रदायिकता की आग फैल गयी। इस आग में झुलसते समाज, तनाव एवं आतंक ग्रस्त लोगों की विवशत का चित्रण इसमें है। साम्प्रदायिक दंगों में जिनकी हत्या हुई, वे अधिकतर गरीब और कमजोर वर्ग के लोग ही थे। इन्हीं को सब से ज्यादा आहत होना था। उच्च वर्ग के लोग प्राय: सुरक्षित स्थितियों में रहकर एक दूसरे को सहयोग देते थे।

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i2.2022.5468

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य में भीष्म साहनी का प्रमुक स्थान है। भीष्म साहनी सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रभावपूर्ण ढंग से अपने साहित्य में चित्रित करते हैं। उनका साहित्य सहानुभूतिपरक और वास्तविक है। भीष्म ने जो कुछ समाज में देखा, अनुभव किया वही सब उनके साहित्य का विषय बना। उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में कहा है–''साहित्यके क्षेत्र में मेरे अनुभव वैसे ही सपाट और सीधे सादे ही रहे, जैसे जीवन में। मैं समझता हूँ, अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज भी नहीं होती। जैसा मैं हूँ वैसी ही मैं चरनाएँ भी रच पाऊँगा।'' जैसे तमस उपन्यास में अंग्रेजों की फूट डालो, राज करो नीति से आम जनता में साम्प्रदायिकता की आग फैल गयी। इस आग में झुलसते समाज, तनाव एवं आतंक ग्रस्त लोगों की विवशत का चित्रण इसमें है। साम्प्रदायिक दंगों में जिनकी हत्या हुई, वे अधिकतर गरीब और कमजोर वर्ग के लोग ही थे। इन्हीं को सब से ज्यादा आहत होना था। उच्च वर्ग के लोग प्राय: सुरक्षित स्थितियों में रहकर एक दूसरे को सहयोग देते थे।

'तमस' भीष्म साहनी का तीसरा उपन्यास है। यह सन 1972-73 में प्रकाशित हुआ। तमस ऐतिहासिक और राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास में भारत विभाजन के पूर्व हुए साम्प्रदायिक दंगों का यथार्थ चित्रण है। भीष्म ने स्वयं कहा है- ''रावल पिंडी में जहाँ हमारा घर था, वहाँ हिन्दुओं और मुसलमानों की मिली-जुली आबादी थी। मैंने साम्प्रदायिक दंगे अपनी आँखों से देखे हैं।'' इस तरह इस उपन्यास ने 1947 की घटना को एक बार फिर से याद दिया है। आज तक भारतीय जनता उस घटना को नहीं भूली, क्योंकि उस घटना की आज भी देश के कोने में जल रही है।

'तमस' मुलरूप से सांप्रदायिक दंगों की उस त्रासदी पर केन्द्रित घटना पर आधारित एक उपन्यास है जो भारत विभाजन के समय घटी थी। उस त्रासदी में हिन्दू और मुसलमान तथा हिन्दू और सिख एक दूसरे के खून के प्यासे बन गए थे। बच्चे, स्त्रियाँ, बूढ़े और जवान सभी इन दंगों के चपेट में गये थे। उसमें असंख्य जन-धन की हानि हुई थी। भारत का विभाजन हुआ लेकिन दंगों के कारण हिन्दू-मुसलमान हमेशा के लिए सांप्रदायिक भावना शिकार हो गए। भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में जो कुछ दर्शाया हैं, वह इस प्रकार है-

भारत विभाजन के कारण हुए सांप्रदायिक दंगे के विनाशक रूप का यथार्थ चित्रण।

सांप्रदायिक दंगों और भारत विभाजन में उपनिवेशवादी अँग्रेजी शासकों की भूमिका।

सांप्रदायिक दंगों में हिन्दू सांप्रदायिक शक्तियों की भूमिका।

सांप्रदायिक दंगों में मुसलमान सांप्रदायिक शक्तियों की भूमिका।

सांप्रदायिक दंगों में आर्थिक और राजनैतिक शक्तियों की भूमिका।

सांप्रदायिक दंगों में सिखों की स्थिति।

भारत विभाजन सांप्रदायिक दंगों और कांग्रेस की भूमिका।

सांप्रदायिक दंगों का स्त्रियों पर प्रभाव।

सांप्रदायिक दंगों का समाज के निम्न वर्ग और निर्धनों पर प्रभाव।

सांप्रदायिक दंगों और तटस्थ विदेशी लोग।

दंगा विरोधी जन शक्तियाँ।

'तमस' में रिचर्ड तत्कालीन अँग्रेजी उपनिवेशवादी शासन का प्रतिनिधि है। वह जिस प्रकार की नीति अपनाता है, वह हिन्दू-मुसलमानों के बीच दंगे भढ़काता है और उनकी सांप्रदायिक भावनाओं की फायदा उठाता है। जब दंगे हो जाते हैं तो वह उन्हें के लिए कुछ नहीं करता। जब अँग्रेजी शासन के बदनाम होने का खतरा पैदा हो जाता है, तो वह आनन-फानन में उपाय करता है। जिससे सांप्रदायिक दंगे शुरू हो जाते हैं या फिर बन्द हो जाते हैं। इसलिए तब तक वह हिन्दू-मुसलमानों को हमेशा के लिए दूश्मन बनाने में कामयाब हो जाता है। तमस उपन्यास में यह दर्शाया गया है कि चालाक अँग्रेजी शासक सीधेसीधे काम न करके दलालों के माध्यम से काम करते थे। उपन्यास में जो दंगे दिखाए गए हैं, वे मस्जिद की सीढ़ियों पर एक सूअर मारकर फेंक दिए जाने से होते हैं। यह सूअर मुरादअली द्वारा मरवाया गया था। मुरादअली अँग्रेजी शासन का दलाल था। उपन्यासकार यह कहना चाहता है कि भारत में सांप्रदायिकता के यथार्थ को समझने के लिए उपनिवेशवादी की नीतियों को समझना होगा।

'तमस' में दर्शाया गया है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों में जो सांप्रदायिक शक्ति है, वे दंगा भड़काने और हत्या करने का प्रशिक्षण देने का कार्य करती है। दंगा करने के लिए आर्य समाज के नेता द्वारा हत्या करने के तरीके बताए जाते हैं और भड़काव भाषण दिए जाते हैं। उधर मुस्लिम समाज में भी सांप्रदायिक शक्तियाँ आग में घी डालने का काम करती हैं। भीष्म साहनी हिन्दू-मुसलमानों की सांप्रदायिक शक्तियों की भूमिका का यथार्थ चित्रण और विश्लेषण करके यह कहना चाहते हैं कि जब तक दोनों ही धर्मों में सांप्रदायिक शक्तियों का बोलाबाला रहेगा तब तक सांप्रदायिक दगों पर नियन्त्रण नहीं किया जा सकेगा।

तमस में दिखाया गया है कि सांप्रदायिक दंगों के कारण स्त्रियाँ और बच्चे कुएँ में कूद कर आत्महत्या करते हैं। इस प्रकार एक बूढ़े दम्पति हरनाम और उनकी पत्नी बन्तो की दुर्दशा होती है। साथ ही साथ एक मुसलमान एक हिन्दू स्त्री को अपने साथ विवाह करने के लिए मजबूर करता है। तमस में यह भी दिखाया गया है कि एक सिख युवक को मौत का डर दिखा कर मुसलमान बनाया जाता है। इन सभी घटनाओं का चित्रण कर के भीष्म साहनी यह कहना चाहते हैं कि सांप्रदायिक दंगों के पीछे चाहे जो भी उद्देश्य हो, किन्तु उनका सबसे भयानक प्रभाव स्त्रियों, बच्चों और कमजोर लोगों पर पड़ता है। जो दंगे धर्म के नाम पर या धर्म की रक्षा के नाम पर साधारण लोगों को भड़काकर करवाए जाते हैं, वे स्त्रियों और निर्बलों के विरुद्ध होते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सांप्रदायिक दंगों का धर्म से कोई लेना-देना नहीं होता। वे तो धर्म विरोधी और मनुष्य विरोधी होते हैं। भीष्म साहनी दिखाते हैं कि सांप्रदायिक भावनाएँ मनुष्य को पशु बना देती है और उसकी अच्छाई छीन कर उसे हत्यारा बना देती हैं। 'तमस' में जो सांप्रदायिक दंगे होते हैं, उनमें समाज के निम्न वर्ग से जुड़ा एक पात्र है, नत्थू, मुराअली उसी से सूअर मरवाता है। नत्थू यह काम पाँच रुपए के लालव में करता है। जबसे पता चलता है कि उसी के मारे हुए सूअर के कारण दंगा हुआ है, तो उसकी मानसिक स्थिति असामान्य हो जाती है। अपनी मानसिक तनाव को वह अपने के माध्यम से कम करना चाहता है, लेकिन उसे सफलता नहीं मिलती।

इस पूरे यथार्थ को जान कर कई सवाल पाठक के मन में आते हैं कि वही नत्थू यह समझ पाता कि एक मुसलमान आखिर सूअर क्यों मरवा रहा है, तो क्या वह सूअर की हत्या करता? यदि नत्थू के पास अपनी और अपने परिवार की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसे होते अर्थात्अगर वह गरीब नहीं होता तो क्या वह सूअर की हत्या करता? यदि नत्थू पढ़ा-लिखा होता और देश की आजादी तथा अँग्रेजों के चरित्र को समझता तो क्या वह सूअर की हत्या करता? यदि सांप्रदायिक दंगा धर्म की रक्षा के लिए हुए होते तो क्या नत्थू को अपने तनाव और अपराधबोध को हलका करने के लिए अपनी पत्नी का सहारा लेने के बारे में सोचना पड़ता?

ये सभी सवाल तमस में उठाए गए हैं। इन सवालों के उत्तर भी तमस की घटनाओं में ही मौजूद हैं। इन्हें आसानी से पढ़ा जा सकता है और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भीष्म साहनी ने यह कहना चाहा है कि भारत में सांप्रदायिक दंगों को जड़ को मिटाने के लिए गरीबी और अशिक्षा को मिटाना अनिवार्य है।

तमस में लीजा और जरनैल सिंह नाम के दो पात्र ही हैं लीजा विदेशी होने पर भी दंगों को अच्छा नहीं मानती और वह रिचर्ड के सामने वैचारिक चुनौती खड़ी करती है। जरनैल सिंह भारतीय अमा जनता के उस वर्ग का प्रतीक है। जो सांप्रदायिक दंगों के अधिक से अधिक सामाजिक प्रभाव समझता है। वह जनता की प्रगतिशील प्रतिरोध शक्ति का प्रतीक है। उसे पागल कहा जाता है और उसकी हत्या कर दी जाती है। भीष्म साहनी कहना चाहते हैं कि अभी तक भारतीय समाज पर रूढ़ीवादी और सांप्रदायिक शक्तियों की पकड़ बहुत मजबूत है। प्रगतिशील शक्तियाँ अभी तक प्रभावशाली नहीं हुई हैं। यदि सांप्रदायिक दंगों को मिटाना है तो शिक्षा के साथ-साथ प्रगतिशील चेतना और प्रगतिशील शक्तियों को बड़ावा देना होगा।

तमस के अध्ययन से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि भारत में विभिन्न धर्मों को मानेवाले लोगों को एक दूसरे के धर्म, समाज, संस्कृति, इतिहास और मूल्यों को गहराई से समजना होगा, तभी सह-अस्तित्व की भावना का विकास होगा और तभी सांप्रदायिक दंगों का हमेशा के लिए अन्त होगा। भारत के सम्पुर्ण विकास के लिए रही एक उपाय है। एक भावना को पाठकों के सामने रखकर भीष्म साहनी ने भारत को सांप्रदायिकता ढंगों से मुक्त एक उज्जवल देश बानो का प्रयास किया है। उपनिशवाद के अनेक साधन हैं। लेकिन अँग्रेजोंने भारत में सांप्रदायिकता को अपनाया। इसकी सही पहचान करना हम भारतवासियों का काम है.

संदर्भ-ग्रंथ

आलोचना त्रैमासिक: भीष्म साहनी स्मृति अंक – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – 2004
भीष्म साहनी, अपनी बात, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – प्रथम संस्करण – 1920
भीष्म साहनी, व्यक्ति और रचना, राजेश्वर सकसेना प्रताप ठाकुर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-1977
भीष्म साहनी, तमस-राजकमल, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण-1987